RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 76, अंक : 19 एक प्रति 2 : रुपये
कुल पृष्ठ : 8
रविवार 11 अगस्त, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-76, अंक : 19, 8-11 अगस्त 2019 तदनुसार 27 श्रावण, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

प्रभो आ

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।।

-सा० पू० १।१।१

शब्दार्थ-हे **अग्ने** = सबके उन्नतिसाधक प्रभो! **वीतये** = प्रकाश के लिए तथा **हव्यदातये** = भोग-शुद्धि के लिए **गृणानः** = उपदेश करता हुआ तू **आयाहि** = सब ओर से आ। **होता** = दाता होकर तू **बर्हिषि** = हमारे हृदय-आसन पर **नि+सत्सि** = नितरां बैठता है।

व्याख्या-यह सामवेद का प्रथम मन्त्र है। साम उपासना-प्रधान वेद है। उपासक को जिन अवस्थाओं में से गुजरता पड़ता है, उन सबका विशद वर्णन सामवेद में है। कइयों को साम के अन्त में युद्धपरक सूक्त देखकर भ्रम होता है कि यह वेद उपासनापरक नहीं है। उपासक भगवान् की उपासना करके प्रतिदिन भगवान् के गुण अपने अन्दर सञ्चित करते-करते भगवान् के बल से बलवान् हो गया है। बल पाकर अब वह पाप के विरुद्ध युद्ध करने वाला होगा। जो उपासक नहीं, उसमें इस देवासुर-संग्राम में कूदने का साहस ही कहाँ?

उपासना का आरम्भ भगवान् की स्तुति और प्रार्थना से होता है, अत: कहा-'**अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये**' = सबको आगे ले-जाने वाले प्रभो! तू ज्ञानप्रकाश और भोगशोधन का उपदेश करता हुआ आ। भगवान् मनुष्य को सब प्रकार का ज्ञान देते हैं। भोगसामग्री भी देते हैं। मनुष्य के अपने वश में है कि वह भोग को बिगाड़ दे अथवा भोग को सँवार दे। भगवान् तो भोग को सँवारने का ही उपदेश देते हैं। अज्ञान के कारण मनुष्य भोगसम्पादन में भूल कर सकता है। मनुष्य को उस भूल से बचाने के लिए ही भगवान् ने वेद का ज्ञान दिया और साथ ही जब कभी पाप-भावना का उद्भव होने लगता है, तब वह हृदयस्थ पाप का वारण करने की प्रेरणा देता है। हम नहीं सुनते, सुनी-अनसुनी कर देते हैं, यह हमारा अपराध है। वह तो हमें हर समय चिताता है। इस स्तुति के साथ प्रार्थना है कि तू '**आयाहि**' = सब तरह आ! भगवान् तो पहले ही हमारे पास है, फिर इस प्रार्थना का प्रयोजन ?

नि:सन्देह भगवान् हर समय हमारे पास है, किन्तु हम अज्ञान के कारण उसे देख नहीं पाते, अत: उससे प्रार्थना है कि तू '**आ याहि वीतये**' = ज्ञानप्रकाश देने के लिए आ, अर्थात् प्रभो! ऐसा उपाय कर, जिससे हमारे हृदय का मल धुल जाए, आवरण का वारण हो जाए, विक्षेप का प्रक्षेप हो जाए, ताकि हम देख सकें कि तू '**नि होता सत्सि बर्हिषि**' = दाता हमारे हृदय में बैठा है। जिस दिन यह ज्ञान हो जाए कि भगवान् हमारे हृदय में विराजमान हैं, तो फिर उस अन्तर्यामी के सामने पाप कैसे करेंगे? उपासना का अर्थ है-पास बैठना। भगवान् के केवल हम समीप ही नहीं बैठे हैं, वरन् वह हमारे हृदयों में रम रहा है। हृदय से विचार और सङ्कल्प उठते हैं, अर्थात् भगवान् केवल हमारे आचारों, कर्मों के ही साक्षी नहीं, वरन् वे हमारे विचारों के भी द्रष्टा हैं। तभी तो प्रार्थना-मन्त्र में कहा है-'**विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्**' [यजु:० ४०।१६] = हे देव! तुम हमारे सारे विचारों और आचारों को जानते हो। (स्वाध्याय संदोह से साभार)

अनुच्छेद 370 पर भारत सरकार का ऐतिहासिक निर्णय

भारत सरकार ने राजनीतिक इच्छाशक्ति का प्रदर्शन करते हुए सोमवार को राज्यसभा में अनुच्छेद 370 को कश्मीर में समाप्त करने का प्रस्ताव पेश किया। कई दलों ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए सरकार का साथ दिया और दोनों सदनों में भारी बहुमत से यह पास हो गया। इस तरह से भारत सरकार के द्वारा अनुच्छेद 370 का संवैधानिक शुद्धिकरण कर दिया गया। अनुच्छेद 370 को समाप्त करने के साथ ही कश्मीर में भी भारत का संविधान लागू होगा। कश्मीर में जहां पहले अपना झंडा फहराया जाता था वहां अब केवल तिरंगा फहराया जाएगा। इस अनुच्छेद के समाप्त होते ही जम्मू कश्मीर विकास की मुख्य धारा से जुड़ जाएगा और आतंकवाद की समस्या समाप्त हो जाएगी। जहां राष्ट्रहित में इस प्रस्ताव का समर्थन सभी राजनीतिक दलों को खुल कर करना चाहिए था वहीं कुछ दलों ने संकीर्ण मानसिकता का परिचय देते हुए इसका विरोध किया जो किसी भी तरह से जम्मू कश्मीर और राष्ट्र के हित में नहीं है। वोट बैंक और स्वार्थ की राजनीति से ऊपर उठकर सभी राजनीतिक दलों को राष्ट्रहित में इस प्रस्ताव का पूरा समर्थन करना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) भारत सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 को समाप्त किए जाने के निर्णय का स्वागत और समर्थन करती है और भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा गृहमन्त्री श्री अमित शाह का हार्दिक धन्यवाद करती है। एक देश, एक विधान के समर्थन में पूरा देश भारत सरकार के साथ है।

वेदों में सामाजिक जीवन

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।

उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः।।

अथर्व.4.13.1. ऋ.10.137.1

(देवाः) हे व्यवहार कुशल (देवाः) विद्वान् लोगों। (अवहितम्) अधोगत पुरूष को (उत) अवश्य (पुनः) फिर (उन्नयथ) तुम उठाते हो (उत) और भी (देवाः) हे दानशील (देवाः) महात्माओं (आगः) अपराध (चक्रुषम्) करने वाले प्राणी को (पुनः) फिर (जीवयथ) तुम जिलाते हो।

मा मा वोचन्नराधसं जनासः पुनस्ते पृश्निं जरितर्ददामि।

स्तोत्र मे विश्वमा याहि शची भिरन्तर्विश्वासु मानुषीषु दिक्षु।।

अथर्व. 5.11.8.

(जनासः) मनुष्य (मा) मुझको (अराधसम्) अदाता (मा वोचन्) न कहें। (जरितः) हे स्तुति करने वाले पुरूष (पुनः) अवश्य (ते) तुझे (पृश्निं) वेद विद्या (ददामि) देता हूँ। (विश्वासु) सब (मानुषीषु) मानव संबंधित (दिक्षु अन्तः) दिशाओं के भीतर (शचीभिः) बुद्धियों के साथ (मे) मेरे (विश्वम्) सब (स्तोत्रम्) स्तुति योग्य कर्म को (आ याहि) प्राप्त हों।

भावार्थ-विद्वान् पुरूष उदार चित्त होकर वेद विद्या संसार में फैलाये और सब लोग विवेक पूर्वक उसके उत्तम कर्म का अनुकरण करें।

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। अथर्व. 6.64.1.

(सम् जानीध्वम्) आपस में जान पहचान करो (सम् प्रच्यध्वम्) आपस में मिले रहो। (जानताम् वः) ज्ञान वान तुम लोगों के (मनांसि) मन (सम्) एक से होवें, (यथा) जैसे (पूर्वे) प्रथम स्थान वाले (संजानानाः) यथावत् ज्ञानी (देवाः) विद्वान् लोग (भागम्) सेवनीय परमेश्वर को (उपासते) सेवन करते हैं।

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम्।

समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभि संविशेध्वम्।।

अथर्व.6.64.2.

अर्थ-हे मनुष्यों। तुम्हारा (मन्त्र) विचार (समानः) एक सा और (समितिः) समिति (समानी) एक सी (व्रतम्) धर्म का आचरण (समानम्) एक सा और (एषाम्) इन तुम सबका (चित्तम्) चित्त (सह) मिला हुआ होवे। (समानेन) एक से (हविषा) ग्राह्य धर्म के साथ (वः) तुमको (जुहोमि) मैं ग्रहण करता हूँ। (समानम्) एक से (चेतः) चिन्तन में (अभि संविशध्वम्) तुम भली भांति प्रवेश करो।

समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति। अथर्व. 6.64.3.

अर्थ-(वः) तुम्हारा (आकूतिः) निश्चय उत्साह, संकल्प (समानी) एक सा और (वः) तुम्हारे (हृदयानि) हृदय (समाना) एक से होवें। (वः) तुम्हारा (मनः) मन (समानम्) एक सा (अस्तु) होवे। (यथा) जिससे (वः) तुम्हारी (असति) गति (सु सह) बड़ा सहाय करने वाली हो।

आ तू षिच कृण्वमन्तं न घा विद्म शवसानात्।

यशस्वतरं शतमूतेः।।

ऋ. 8.2.22.

अर्थ-हे मनुष्यों। (सं गच्छध्वम्) मिल कर चलो (संवदध्वम्) परस्पर मिलकर बातचीत करो। (वः) तुम्हारे (मनांसि) मन (संजानाना) एक समान होकर ज्ञान प्राप्त करें, (यथा) जिस प्रकार (पूर्वे) पूर्व (देवाः) विद्वान् ज्ञानी जन (भागम्) सेवनीय प्रभु को (जानानाः) जानते हुए (समुपासते) उपासना करते आये हैं।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।

समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

ऋ. 10.191.3.

अर्थ-(एषाम्) इन सबका (मंत्रः) विचार (समानः) समान हो (समितिः) समिति (समानी) समान हो (मनः) मन (समानम्) समान हो (चित्तम्) चित्त (सह) एक उद्देश्य वाला हो। (वः) तुम्हें (समानम्) समान (मन्त्रं) विचार वाला (अभिमंत्रये) बनाता हूँ। (वः) तुम्हें (समानेन) समान (हविषा) खान पान से (जुहोमि) युक्त करता हूँ।

यस्ते रेवाँ अदा शुरिः प्रममर्श मघत्तये।

तस्य नो वेद आ भर।।

ऋ. 8.45.15.

हे इन्द्र। आप (तस्य) उस कृपण पुरूष का (वेदः) धन (नः) हमारे लिये (आ भर) ले आवें (यः) जो (रेवान्) धनिक होकर भी (ते) आपके उद्देश्य से दीन दरिद्र मनुष्यों के मध्य (अदा शुरिः) कुछ नहीं देता। प्रत्युत (मघत्तये) धन दान करने के लिये (प्रममर्ष) अन्य उदार पुरूषों की भी जो निन्दा किया करता है।

आ हि ष्मां सूनवे पिता पिर्य जत्यापये।

सखा सख्य वरेण्यः।।

ऋ. 1.26.3.

हे मनुष्यों। जैसे (पिता) पिता (सूनवे) पुत्र के (सखा) मित्र (सख्ये) मित्र के और (आपिः) सुख देने वाला विद्वान् (आपये) उत्तम गुण व्याप्त होते विद्यार्थी के लिये (आयजति) अच्छे प्रकार यत्न करता है। वैसे परस्पर प्रीति के साथ कार्यों को सिद्ध कर (हि) निश्चय करके (स्म) वर्तमान में उपकार के लिये तुम सङ्गत होओ।

यो मायातुं यातुधाने त्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मी त्याह।

इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोर धमस्पदीष्ट।।

ऋ. 7.104.16.

(यः) जो राक्षस (मा) मुझको (अयातु) अदण्ड्य को (यातुधाने त्याह) राक्षस कहता है (वा) और (यः) जो (रक्षाः) रक्षक होकर (शुचिस्मस्मि) मैं पवित्र हूँ (इत्याहु) ऐसा कहता है (इन्द्रः) परमात्मा (ते) उस साधु को असाधु कहने वाले को और अपने आप को असाधु होकर साधु कहने वाले को (महता वधेन) तीक्ष्ण शस्त्र से (हन्तु) नष्ट करे (विश्वस्य) संसार के ऐसे (जन्तोः) जन्तुओं से जो (अधमः) अधम हैं परमात्मा उनका (पदीष्ट) नाश करें।

स मौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः सम्मातरा चिन्न समं दुहाते।

यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः।।

ऋ.10.117.9.

(समौचित्) समान होते हुए भी (हस्तौ) दोनों हाथ (समम्) समान कार्य (न) नहीं (विविष्टः) करते हैं। (संमातरा) एक माता द्वारा उत्पन्न दो गाये (चित्) भी (समम्) समान दूध (न) नहीं (दुहाते) देती हैं (यमायोः) युगल बच्चों का (चित्) भी (समा) बराबर (वीर्याणि) बल (न) नहीं होता है (ज्ञाती) समान परिवार के (सन्तौ) होते हुए (चित्) भी दो व्यक्ति (समम्) समान (न) नहीं (पूर्णातः) दान करते हैं।

समा नौ बन्धुर्वरूण समा जा वेदा हं तद्यन्नावेषा समाजा ददामि तद् यत् ते अदत्ते

अस्मि युज्यस्ते सप्तपदः सखास्मि।। अथर्व. 5.11.10.

(वरूण) हे श्रेष्ठ पुरूष। (नौ) हम दोनों की (बन्धुः) बन्धुता (समा) एक ही है और (जा) जाति भी (समा) एक ही है ((अहम्) मैं (तत्) यह (वेद) जानता हूँ। (यत्) जिससे (नौ) हम दोनों की (एषा) यह (जा) उत्पत्ति (समा) एक है। (तत्) वह (ददामि) देता हूँ (यत्) जो (ते) तुझे (अदत्ता) बिना दिये हुए (अस्मि) हूँ। (ते) तेरा (युज्यः) योग्य (सप्त पदः) अधिकार पाये हुए (सखा) सखा (अस्मि) हूँ।

भावार्थ-विद्वान् पुरूष सब मनुष्यों और प्राणियों को अपने समान जान कर प्रीतिपूर्वक उनका हित करे।

मा चिदन्यद्विशंसत सखायो मा रिषण्यत्।

इन्द्र मित्स्तोता वृषणं सचा मुहुरूक्था च शंसत।। ऋ. 8.1.1.

(सखायः) हे मित्र लोगों। (अन्यत् मा चित् विशंसत) परमात्मा के अतिरिक्त किसी की उपासना मत करो। (मा रिषण्यत) आत्म हिंसक मत बनो। (वृषणं) सब कामनायें पूर्ण करने वाले (इन्द्रम् इत) परमात्मा की ही (स्तोत) स्तुति करो। (सचा) सब एकत्रित होकर (सुते) साक्षात्कार करने पर (मुहुः) बार बार (उक्था, च शंसत) परमात्मा के गुणों का कीर्तन करने वाले स्तोत्रों का पाठ करो।

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरूताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः।

उतो रयिः प्रण तो नोप दस्यत्थुता पृणन्मार्डि तारं न विन्दते।। ऋ. 10.117.1.

(देवाः उ) देवों ने (वै) निश्चय ही सबको (क्षुधम्) भूख (न इत्) नहीं (ददुः) दी है अपितु (वधम्) मौत दी है (उत) और (आशितम्) खाने वाले को भी (मृत्यवः) मृत्यु (उप गच्छन्ति) प्राप्त होती है (उतो) और (पृणतः) देने वाले का (रयिः) धन (न) नहीं (उपदस्यति) नष्ट होता है (उत) और (अप्रणत) न देने वाला (मर्डितारम्) सुख देने वाले को (न) नहीं (विदन्ते) प्राप्त करता है।

य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन्न फितायोपजन्मुषे।

स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विदन्ते।।

ऋ. 10.117.2.

(यः) जो (अन्नवान्) अन्न वाला अथवा धनवान (आध्राय) दुर्बल (पित्वः) अन्न को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

श्रावणी और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व अवश्य मनाएं

श्रावणी अर्थात् रक्षाबन्धन और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व वर्षा ऋतु के प्रमुख पर्व हैं। जहां एक ओर श्रावणी का पर्व हमें स्वाध्याय का सन्देश देता है, चिन्तन और मनन के लिए प्रेरित करता हैं, धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है, वहीं पर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हमें महामानव श्रीकृष्ण के पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा देता है। योगीराज श्रीकृष्ण का जीवन हमें निष्काम कर्म की ओर प्रेरित करता है। श्रावणी का पर्व हमारे ऋषियों ने स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त होने और मनुष्य जीवन की महत्ता को समझने के लिए नियत किया है। शास्त्रों में मनुष्य जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास इन चार भागों में बांटा है और चारों के साथ आश्रम शब्द जोड़ दिया है। जिसका अर्थ है कि श्रम करते रहना। वेदों का स्वाध्याय करना चारों आश्रमों के लिए अनिवार्य है। किसी भी आश्रम को स्वाध्याय करने में छूट नहीं दी गई है। यहां तक कि सन्यासी सब प्रकार के कार्यों से मुक्त है परन्तु सन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकम् न सन्यसेत् वेद को छोड़ने का आदेश नहीं है। ऋषि दयानन्द मानते थे कि यदि धरती के लोग वेद को अपना लें और उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपना जीवन बिताने लग जाएं तो उनके जीवन से सब प्रकार के दोष दूर हो जाएंगे, सब प्रकार के असत्य और असत्य और झूठ, सब प्रकार के कपट और छल, सब प्रकार के वैर-विद्वेष, कलह और लड़ाई झगड़े, सब प्रकार के लोभ लालच, लूट-खसोट, चोरी-डाके और सब प्रकार की कुत्सित कामनाएं और वासनाएं परे भाग जाएंगी और वे परम पवित्र बन जाएंगे। सब लोग भाई-भाई की भांति प्रेम से मिलकर रहा करेंगे। कोई किसी के अधिकारों का हनन नहीं करेगा। संसार से लड़ाईयों और युद्धों की विभीषिका मिट जाएंगी। सर्वत्र शान्ति और प्रेम का साम्राज्य छा जाएगा। धरती स्वर्ग बन जाएगी और उस पर रहने वाले लोग देवता बन जाएंगे। सब लोगों के घरों में सुख-समृद्धि और आनन्द की गंगा बहने लगेगी। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा है कि-

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

श्रावणी का पर्व हमें वेदाध्ययन के लिए प्रेरित करता है। अगर हम महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर तक पहुंचाना चाहते हैं तो अपनी-अपनी समाजों में वेद प्रचार सप्ताह अवश्य मनाएं। वेद के विषय में महर्षि का जो मत है, जो विचार है उस विचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हमें वेद प्रचार को बढ़ावा देना होगा। श्रावणी के पर्व पर हम वेद के स्वाध्याय का व्रत लें। वेद का अध्ययन हमें मानव बनाता है। महर्षि दयानन्द ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म बताया है। इस परम धर्म का पालन करने के लिए हमें श्रावणी पर्व पर व्रत ग्रहण करना है। हम घर-घर में वेद तथा महर्षि दयानन्द के संदेश को फैलाएं। आर्य समाजों का लक्ष्य वेद प्रचार होना चाहिए। सभी समाजें श्रावणी पर्व पर लोगों को स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित करें। वैदिक साहित्य लोगों में बांटे और उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा वेद प्रचार के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कई वर्षों से वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। सभा का उद्देश्य वेद का प्रचार करना है। साहित्य के पढ़ने से लोगों की बुद्धि जागृत होगी और वे वेद के महत्व को जानने लगेंगे। सभी समाजें इन दिनों में एक-एक सप्ताह का वेद प्रचार सप्ताह अवश्य मनाएं और लोगों को वेद के बारे में, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के बारे में जागरूक करें।

श्रावणी पर्व के एक सप्ताह के बाद श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आता है। योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन हमारे लिए प्रेरणास्रोत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप को वर्णन करते हुए लिखते हैं कि- देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित्त मनमाने दोष लगाएं हैं। दूध-दहीं, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासलीला, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण में लगाएं हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत वाले न होते तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में श्रीकृष्ण योगी थे। परन्तु आज श्रीकृष्ण के स्वरूप को देखकर, लोगों के द्वारा उनका जन्मदिवस मनाने का ढंग देखकर सभ्य व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जाता है। ऐसे योगीराज, महामानव, चरित्रनायक के जीवन के साथ वास्तव में अन्याय हुआ है। महापुरूषों के जीवन चरित्र में जितना अन्याय हिन्दू समाज ने श्रीकृष्ण के साथ किया है उतना अन्य किसी महापुरूष के साथ नहीं हुआ है। इसलिए जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए हम श्रीकृष्ण के शुद्ध और आप्त स्वरूप को जनता के समक्ष रखें।

15 अगस्त को श्रावणी पर्व रक्षाबन्धन और 24 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आ रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों और शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि सभी आर्य बन्धु मिलकर इन दोनों पर्वों को बड़े उत्साह के साथ अपनी-अपनी समाजों और शिक्षण संस्थाओं में मनाएं। इन दोनों पर्वों का उद्देश्य हमारी वैदिक संस्कृति और महापुरूष के शुद्ध जीवन चरित से अवगत कराना है। श्रावणी के पर्व पर लोगों को स्वाध्याय की ओर प्रेरित करना है। आज श्रावणी का पर्व केवल रक्षाबन्धन तक सिमट कर रह गया है। लोग यज्ञोपवीत की परम्परा को भूल गए हैं। श्रावणी के पर्व पर गुरूकुलों में नए ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार किया जाता है। लोग भी इस दिन नया यज्ञोपवीत धारण करते हैं। मुगल बादशाह औरंगजेब के समय में लोग अपना बलिदान देना स्वीकार करते थे परन्तु यज्ञोपवीत नहीं उतारते थे। अपनी संस्कृति, सभ्यता और धर्म के प्रति आज भी त्याग एवं समर्पण की आवश्यकता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व को मनाने का उद्देश्य महाभारत के नायक, पाण्डवों की जीत के सूत्रधार योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन से अवगत कराना है। महाभारत और गीता में कहीं पर भी श्रीकृष्ण के विषय में उनके चरित्र का हनन करने वाली बातें नहीं आती, जितना पुराणों में उनके चरित्र को विकृत करने का कार्य किया गया है। जहां महाभारत में वे एक महायोद्धा, पाण्डवों की जीत के सूत्रधार, एक महान नीतिकार के रूप में हमारे सामने आते हैं वहीं पुराणों में उन्हें माखनचोर, कामी, रासलीला करने वाला आदि तरह-तरह के अश्लील कृत्यों से जोड़ा गया है जो उनके वास्तविक जीवन चरित्र से मेल नहीं खाता। इसलिए महाभारत में वर्णित श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप को जन-जन तक फैलाएं। श्री कृष्ण के बारे में जन-सामान्य में जो भ्रान्तियां फैल गई हैं उन मिथ्या भ्रान्तियों से बच्चों तथा लोगों को अवगत कराएं। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, भूले-भटके मनुष्य को सही राह दिखाना आर्य समाज का लक्ष्य है, महापुरूषों के शुद्ध स्वरूप को बताना हमारा परम धर्म है। पर्व हमारे जीवन में क्या संदेश लेकर आते हैं? पर्वों का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व आम जनता को बताएं। तभी पर्वों को मनाना सार्थक होता है। इसलिए आप सभी से विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार का लक्ष्य लेकर हम सभी वेद प्रचार के कार्य में जुट जाएं और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

यज्ञ से पूर्व शुद्धि

ले.-पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिल्का, पंजाब

(ख) आन्तरिक शुद्धि

आभ्यान्तरा रागद्वेषासत्यादि त्यागेन।

राग, द्वेष, असत्य आदि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए।

आन्तरिक शुद्धि भी दो प्रकार की होती है-

(1) मानसिक शुद्धि (2) आत्मिक शुद्धि

1. मानसिक शुद्धि का अर्थ है-मन की शुद्धि।

मनु महाराज कहते हैं-

मनः सत्येन शुध्यति।।

मनु. 5/109

सत्याचरण से मन शुद्ध होता है। अत:।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयाद् एष धर्मः सनातनः।। मनु. 4/138

सत्य बोलो, प्रिय बोलो। अप्रिय सत्य (अर्थात् अन्धे को अन्धा कहना) न बोलो। प्रिय असत्य (झूठ) मत बोलो। यही सनातन धर्म है।

कबीर के शब्दों में-

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै सांच है, ताके हिरदै आप।।

वस्तुत: सत्य बोलना एक तप है। जैसे तप करना कठिन है, वैसे ही सत्य बोलना भी कठिन है।

सत्यं वद। सत्यान्न प्रमदितव्यम्।। तै.उप. 1/11

सदा सत्य बोलो। सत्य बोलने में कभी प्रमाद अर्थात् आलस्य मत करो।

वस्तुतः मन सत्य मानने, सत्य बोलने और सत्याचरण से शुद्ध होता है।

भद्रं भद्रमिति ब्रूयात्।। मनु. 4/139

सदा भद्र अर्थात् हितकारी वचन बोलना चाहिए।

परन्तु मन की स्थिति बड़ी ही विचित्र और अवर्णनीय है। कहीं से कहीं चला जाता है-

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

यजु. 34/1

हे जगदीश्वर! जो मन जागृत अवस्था में दूर-दूर तक चला जाता है और निद्रा अवस्था में भी उसी प्रकार दूर-दूर तक चला जाता है। दूर-दूर तक जाने वाला जो मन ज्योतियों की भी ज्योति है, वह मेरा मन शुभ-संकल्पों वाला और शुद्ध स्वभावयुक्त हो।

वस्तुत: हमारे शरीर के सभी कार्यों का संचालक मन है। यह मन जागते हुए, सोते हुए सारे समय हमारे कार्यों का संचालन करता है। इस मन को स्थिर करना कोई साधारण बात नहीं। कवि के शब्दों में-

यह मन चंचल है इतना, नहीं विश्राम पाता।

मेरा मन तेरे मनन में लग जाए, समझ नहीं आता।।

एक अन्य भक्त का कथन भी मनन योग्य है-

यह मन बड़ा है चंचल, सिमरन में नहीं लगता।

जितना इसे समझाऊं, उतना ही मचल जाए।।

दाता तेरे सिमरन का, वरदान जो मिल जाए।

मुरझाई कली दिल की, इक बार तो खिल जाए।।

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से ही यह कार्य सम्भव है।

अत: आइए, उसी दयालु कृपालु परमेश्वर से प्रार्थना करें-

आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।

रागद्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।

पाप से हमें बचाइए, करके दया दयाल।

अपना भक्त बनाय कर, सबको करो निहाल।।

परमेश्वर से प्रार्थना करना अच्छी बात है, परन्तु भक्ति में मन को टिकाना अत्यन्त दुष्कर है तभी तो अर्जुन योगिराज श्री कृष्ण से कहते हैं-

चञ्चलं हि मनः कृष्ण।। गीता 6/34

भगवान्! यह मन बड़ा चंचल है।

श्रीकृष्ण ने अत्यन्त सारगर्भित उत्तर दिया। वस्तुतः उन्होंने इस उत्तर में गागर में सागर भर दिया है-

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।। गीता 6/35

हे अर्जुन! मन स्थिर करने के लिए बार-बार अभ्यास और वैराग्य से वश में किया जा सकता है।

मन को वश में करने का प्रथम उपाय है-अभ्यास। मन टिकाने के लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। बिना अभ्यास के यह सम्भव नहीं। अत: लगातार प्रयत्नशील बने रहें।

करत-करत अभ्यास के, जड़मत होत सुजान।

रसरी आवत-जात के, सिल पर पड़त निसान।।

मन का विश्वास बनाए रखें, हिम्मत न हारें। प्रभु से प्रार्थना करें-

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।

हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।।

अपनी करूणा का जल तू बहा के, कर दे पावन हर एक मन का कोना।

हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।।

मन बड़ा गतिशील है। एक स्थान पर नहीं ठहरता। एक विषय में मन को लगाते हैं पर वह वहां से अन्य स्थान पर चला जाता है। अत: सावधान करते हुए कहते हैं-

मन की गति संभालिए, ईश्वर की ओर डालिए।

धोना जो चाहो जीवन को धो, ओम् जपो, ओम् जपो।।

अनेक भक्त हाथ में माला लेकर ओम्-ओम् अथवा राम-राम आदि नाम जपते हैं पर मन कहीं अन्यत्र फिरता रहता है। अत: यह जप सफल नहीं होता-

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं।

मनुवां तो चहुंदिशि फिरे, यह तो सुमिरन नाहिं।।

माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।

कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

इस मन की तेज गति का क्या पूछना? यह संसार के तेज से तेज चलने वाले पदार्थों से भी तेज गतिवाला है। यह पलक झपकते ही देश विदेश आदि बहुत दूर-दूर की यात्राएं कर आता है। मन को इच्छित स्थान पर पहुंचने में देर नहीं लगती। आप अभी एकान्त में बैठ कर सन्ध्या कर रहा हैं। ईश्वर भक्ति की बात चल रहा है। गुरु जी दर्शन का पाठ पढ़ा रहे हैं। अध्यापक महानुभाव गणित की शिक्षा दे रहे हैं। पर मन तो दूर चला गया है। वह हलवाई की दुकान पर मिठाई का स्वाद ले रहा है। सिनेमा के पर्दे पर अभिनेत्रियों के दर्शन कर रहा है। दूसरे के धन को पाने की योजनाएं बना रहा है। भला कहां गयी वह भक्ति? कहां गया दर्शन का ज्ञान? गणित की शिक्षा भी अधूरी रह गई।

अत: मन को केन्द्रित करें। एक जगह पर टिकाएं-

चंचल मन नित ओम् जपा कर, ओम जपा कर ओम।

प्रात: काल को शुभ वेला में, सन्ध्या की पुलकित रजनी में।

मन मन्दिर में ज्योति जगा कर, ओम जपा कर ओम।।

यदि हम गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो प्रतीत होता है कि मन एक मंदिर है। जैसे मन्दिर को प्रतिदिन स्वच्छ करते हैं। झाड़ते, पोछते और धोते हैं जिससे वहां का वातावरण चित्ताकर्षक हो जाता है। वैसे ही मनमन्दिर को भी प्रतिदिन साफ करें, जिससे मन की मैल दूर हो जाए और अपने अन्दर ही परमात्मा का साक्षात्कार हो जाए। किसी भक्त कवि ने कितनी सुन्दर बात कही है।

तेरे पूजन को भगवान्, बना मन-मंदिर आलीशान।

यह संसार है तेरा मन्दिर, तू रमा है इसके अन्दर।

करते ऋषि-मुनि सब ध्यान, बना मन मंदिर आलीशान।।

तू ही वन में, तू ही मन में, तू हर दिल के हर आंगन में।

तेरा रूप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलीशान।।

यह मन मन्दिर इतना आलीशान, सुन्दर और आकर्षक बना हुआ है कि इसको इसी रूप में बनाए रखने के लिए हमें इसकी सफाई करते रहना भी तो आवश्यक है। अत: भक्त को सावधान किया गया है। **(क्रमश)**

पृष्ठ 8 का शेष-वेद का ज्ञान...

प्रतीक है। वैदिक धर्म में स्वाध्याय को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वैदिक संस्कृति में मनुष्य जीवन को चार भागों में बांटा गया है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। स्वाध्याय को हमारी संस्कृति में इतना महत्व दिया गया है कि यह प्रत्येक वर्ण और आश्रम के लिए अनिवार्य और आवश्यक है। आश्रमों में प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य आश्रम केवल गुरूओं के सानिध्य में रहकर स्वाध्याय के लिए है।

सत्संग का शुभारम्भ पवित्र हवन यज्ञ तथा वेद मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। मुख्य यजमान अभय आर्य जी ने परिवार सहित पवित्र यज्ञाग्नि में आहुतियां प्रदान कर जीवन में बुराइयों से दूर रहने और अच्छाइयों को अपनाने का व्रत लिया। पंडित राजेन्द्र शास्त्री ने हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के उपरान्त गुरुकुल कुरुक्षेत्र से पधारे युवा भजनोपदेशक जसविन्द्र आर्य ने अपने मधुर भजनों एवं उपदेश के माध्यम से वेदों की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला तथा ईश्वर महिमा के गीत के भजन सुना कर माहौल को भक्तिमय बना दिया। ढोलक पर उनका साथ मोहिन्द्र आर्य ने दिया और सारा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। वेद प्रचार के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन विजयेन्द्र शास्त्री जी के मार्ग दर्शन में आर्य कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बुक्स मार्किट, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, आदर्श नगर तथा आर्य समाज राजपुरा में भी किया गया। इस मौके पर सर्वश्री वीरेन्द्र सिंगला जी, वेद प्रकाश तुली, कर्नल आनन्द मोहन सेठी, जतिन्द्र शर्मा, हर्ष वधवा, प्रवीण कुमार आर्य, श्रीमती संगीता सिंगला, गुलाब सिंह, बैजनाथ, के.के. मोदगिल, श्री रमेश गंडोत्रा एवं शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों में प्रिंसीपल विवेक तिवारी, प्रिंसीपल एस.आर. प्रभाकर, प्रिंसीपल संतोष गोयल, प्रिंसीपल निखिल रंजन, प्रधान विजय आर्य विशेष तौर पर उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन पर ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। -राज कुमार सिंगला प्रधान आर्य समाज चौक पटियाला

सुसंस्कृत भव

ले.-सुशील वर्मा, गली मास्टर मूल चन्द वर्मा, फाजिल्का

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। चरक ऋषि का कथन है-''संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते'' अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर सद्गुणों का आधान कर देने का नाम संस्कार है। सस्कार मानव के नव-निर्माण की योजना है। बालक पर तीन प्रकार के संस्कारों का प्रभाव होता है। जन्म के साथ ही वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। पहले वे जिन्हें वह जन्म-जन्मान्तरों से अपने साथ लाता है, दूसरे संस्कार वे जो उसे अपने माता पिता के संस्कारों के रूप में वंश परम्परा से वहन करता है। और इसके साथ ही पर्यावरण द्वारा इस जन्म में प्राप्त संस्कार। संस्कार नव निर्माण की यह योजना है जिसमें बालक को ऐसे पर्यावरण से आच्छादित कर दिया जाए जिसमें उसे अच्छे संस्कारों में पनपने का अवसर प्राप्त हो। बुरे संस्कार चाहे वे पिछले जन्मों से हो, माता पिता के वंशानुगत प्राप्त हो रहे हो, दूर किए जाए। भौतिक पर्यावरण अर्थात् प्रकृति के साथ सम्पर्क का बालक के जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है। ऋग्वेद (5.8.14) के अनुसार।

''उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियो विप्रा अजायत''

शिक्षा केन्द्र प्रकृति के उन स्थलों में होते थे जहाँ एक तरफ पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ, दूसरी ओर कल कल करती नदी का प्रवाह। बालक प्रकृति के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित करता हुआ शिक्षा ग्रहण करता था। प्रकृति के शुद्ध वातावरण में रखने से मन मस्तष्कि को शुद्ध संस्कारों से विकसित किया जाए, शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य था। इसके साथ साथ मानसिक पर्यावरण अर्थात् कुल की भावना को भी जीवित रखा जाता था। माता पिता चूंकि हर समय बालक की शिक्षा पर ध्यान नहीं दे सकते, इसलिए उसे शिक्षा के लिए बाहर भेजा जाता था। शिक्षा संस्थानों का दायित्व था कि वे उसे चरित्र निर्माण एवं शिक्षित करे। उस प्रयोजन के लिए ''गुरुकुल पद्धति'' का निर्माण किया। 'गुरूकुल' अर्थात् गुरु का 'कुल'। यहाँ कुल शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया कि शिक्षा का काम बच्चे को एक छोटे कुल अर्थात् परिवार में से निकाल कर बड़े परिवार में प्रवेश करवाया जाए। उस की धारणा यही थी कि बच्चे का विकास 'कुल' में ही होना चाहिए। पहले माता पिता का 'कुल', फिर गुरू के 'कुल' और फिर समाज के 'कुल' में। समाज के कुल में जब वह प्रवेश करता है तो ''समानता की भावना'' के साथ प्रवेश पाता है। गुरु जब बच्चे को अपने 'कुल' में पालता है तो एक उत्कृष्ट भाव के साथ उसका पालन करता है। इस सम्बन्ध में अथर्ववेद का मन्त्र (11,3,5,3) कहता है।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्त्र:।

तं रात्रीस्तिस्र उदरे विभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवा:।।

अर्थात् आचार्य उस बालक को इस प्रकार सुरक्षित रखता है जैसे माता पुत्र को अपने गर्भ में सुरक्षित रखती है। गुरु और शिष्य के निकटतम सम्बन्ध को समझाने के लिए माता तथा गर्भ के सम्बन्ध से अधिक सुन्दर अन्य उपमा क्या हो सकती है। बालक माता पिता को तो छोड़ आता है, परन्तु उसका स्थान आचार्य ले लेता है। वह आचार्य उसका शिक्षक ही नहीं, पिता भी था, विद्या उसकी माता तथा गुरु के अन्य शिष्य उसके भाई। एक ऐसे परिवार का अंश जहाँ जन्म जाति का कोई भेद नहीं, सारा समाज ही उसका परिवार। आज स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय शिक्षणालय न होकर फैक्टरियाँ बन गई है। जिसमें कुछ फैक्टरी के मालिक है, कुछ मजदूर और परिणाम बैचेनी, अराजकता एवं भेद भाव।

गुरूकुल में प्रवेश होते ही बालक को तीन प्रक्रियाओं में से गुजरना आवश्यक है। आश्रमवास, उपनयन संस्कार एवं ब्रह्मचर्यव्रत पालन।

आश्रमवास-आश्रम का अर्थ है 'श्रम'। यहाँ श्रम ही श्रम है, आलस्य को स्थान नहीं। परिश्रम अर्थात् तपस्या ही मूलमन्त्र है। गुरूकुलवास को ब्रह्मचर्याश्रम कहा गया है। बालक को शिक्षित किया जाता है-

''कर्म कुरु, दिवा मा स्वाप्सी, क्रोधानृते वर्जय, उपरि शय्यां वर्जय'' काम करते रहो, श्रम का जीवन बिताना, निठल्ले नहीं रहना, रात को सोना, दिन सोने के लिए नहीं, काम करने के लिए है। क्रोध मत करना, झूठ मत बोलना, गद्दों पर नहीं पड़े रहना, तपस्वी का जीवन बिताना। अथर्ववेद का ब्रह्मसूक्त उपदेश देता है-

''**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा-मृत्युमुपाघ्नत**''

आश्रम में कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं, न कोई गरीब, न कोई अमीर, सभी भाई एक समान, गुरु के शिष्य, न कोई जात पात, न कोई भेद भाव।

उपनयन संस्कार-दूसरी प्रक्रिया है उपनयन संस्कार उपनयन अर्थात् उप-समीप, नयन ले जाना। तात्पर्य गुरु के समीप चले जाना-यह है उपनयन। इस संस्कार के समय आचार्य शिष्य के प्रति कहता है-

''मम व्रते ते हृदयं दधामि, मम चितं अनुचितं ते अस्तु''

आचार्य शिष्य को विश्वास दिलाता है कि तेरे हृदय को मैं अपने हृदय में लेता हूँ। तेरे चित्त को मैं अपने चित्त में लेता हूँ। वे दोनों एक दूसरे के निकट आने का इतना प्रयत्न करते हैं कि एकमना हो जाए। ''मम वाचं एकमना जुषस्व''। यह पराकाष्ठा है गुरु के आदर्श की, शिष्य के प्रति अपने कर्त्तव्य की प्रतिज्ञा। हृदय एवं चित्त दो ही तो बहुमूल्य तत्त्व है जिसे गुरू ने अपना बना लिया। इसी कारण से ही शिष्य 'द्विज' है अर्थात् दूसरा जन्म। पहला जन्म माता पिता के और दूसरा गुरु के हृदय से, चित्त से। ''आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्त:'' 'अर्थात् उसके गर्भ से मानसिक जन्म। तभी तो शिष्य को 'अन्तेवासी' कहा गया अर्थात् गुरु के भीतर बसा हुआ। गुरु के हृदय में वास करने वाला।

ब्रह्मचर्यव्रत पालन: यह तीसरी प्रक्रिया है। ब्रह्मचारी का अर्थ है ''ब्रह्मणि चरतीति ब्रह्मचारी'' अर्थात् जो ब्रह्म में विचरण करे, वह ब्रह्मचारी। ब्रह्म अर्थात् जो महान है। तात्पर्य यह कि जो बालक जीवन में महान होने की अभिलाषा को मस्तिष्क तथा हृदय में लेकर गुरु के पास आता है, वह ब्रह्मचारी। दूसरा अर्थ है अपने शरीर की भौतिक शक्ति का संचय करना, वीर्य को क्षीण नहीं होने देना। सदाचारी जीवन यापन करना। पुस्तक ज्ञान के अतिरिक्त चरित्र निर्माण करना गुरूकुल का उद्देश्य रहा है। वैदिक विचारधारा में शिक्षक को आचार्य कहा गया है। आचारं ग्राह्यतीति आचार्य ''केवल मात्र इतना ही नहीं कि ब्रह्मचारी को मौखिक तौर पर सदाचार की शिक्षा दे, अपितु ग्राह्यति अर्थात् शिक्षक स्वयं सदाचार का आचरण करता हुआ बालक को ऐसी परिस्थिति में रखे कि शिष्य सदाचार को ही ग्रहण करे। उपनिषदों में शिष्य गुरू के पास समित्पाणि लेकर पहुँचता था। 'समित्पाणि' का अर्थ है हाथ में समिधा लेकर जाना। कहने को तो समिधा एक लकड़ी है। परंन्तु अग्नि का स्पर्श पाकर वह प्रदीप्त हो जाती है। इसी प्रकार शिष्य भी गुरू के पास उस जड़ समिधा की तरह से प्रवेश करता है परन्तु गुरु के सान्निध्य में प्रदीप्त हो कर समाज को प्रकाशित कर देता है। शिष्य का आत्मसमर्पण ही उसे उत्कृष्ट बना देता है।

मिटा दे अपनी हस्ती को यदि कुछ मर्तबा चाहे।

कि दाना खाक में मिलकर गुलो गुलजार होता है।।

आचार्य के स्पर्श से शिष्य अग्नि की भांति प्रदीप्त होने का संकल्प लेकर उपस्थित हुआ है। यदि आचार्य स्वयं ही बुझी हुई अग्नि है तो वह शिष्य को क्या प्रदीप्त करेगा? इसलिए आचार्य अपनी मर्यादा को अनुशासन में रख कर स्वयं सदाचार का अनुसरण कर शिष्य का मार्ग प्रशस्त करवाने में सफल होता है। वही गुरु है, वही आचार्य है।

वैदिक शिक्षा का लक्ष्य केवल मात्र पुस्तक ज्ञान तक ही सीमित नहीं रहा अपितु पुस्तक अध्ययन के साथ साथ जीवन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी आवश्यक एवं उपयोगी माना गया है। इस सम्बन्ध में उपनिषदों में इसका विस्तृत वर्णन है। मुण्डक उपनिषद् में शौनक आचार्य अंगिरस को कहता है कि मैंने चारों वेद, छन्द, कल्प, निरूक्त, शिक्षा आदि सब पढ़ चुका हूँ। इससे मुझे 'अपरा विद्या' का ज्ञान तो हो गया, परन्तु पराविद्या का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। यहाँ अपरा विद्या का सम्बन्ध भौतिक विज्ञान से है और आत्मविद्या को 'पराविद्या' कहा गया है। शौनक ने Scientific/Physical ज्ञान तो प्राप्त कर लिया परन्तु Spiritual knowledge नहीं प्राप्त कर पाया कहने का तात्पर्य यह है कि भौतिक ज्ञान से आत्मज्ञान कहीं उच्च है। ऐसा ही वर्णन छान्दग्योपनिषद् में नारद द्वारा अपने आचार्य सनत् कुमार को किया गया है। नारद ने सब भौतिक विद्याओं के ज्ञान के बारे में बता दिया और कहा ''सोऽहं भगवो मन्त्रविदेवास्मि नात्मवित्'' अर्थात् मैं 'मन्त्रवित्' तो हो गया हूँ परन्तु 'आत्मवित्' नहीं हुआ। अमृत की प्राप्ति तो आत्मज्ञान से ही होगी। सारांश यह है कि वैदिक शिक्षा में भौतिक शिक्षा तो है ही परन्तु आत्मविद्या अथवा आध्यात्मिकता को उच्चतम माना जाता रहा है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि शिक्षा ग्रहण के पश्चात् स्नातक से यही अपेक्षा की जाती थी कि स्वाध्याय करते हुए प्रवचनों द्वारा जन जन में ज्ञान की वृद्धि करो और जनमानस को सुमार्ग का उपदेश दे। दीक्षान्त समारोह में उससे प्रतिज्ञा ली जाती थी ''स्वाध्याय-प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्'' (तैत्तिरीयो-पनिषद् शिक्षा वल्ली)

ऐसी ही रही है हमारी संस्कृति, हमारी परम्पराएँ। यही थी बालक को 'द्विज' बनाने की प्रतिज्ञा, नव निर्माण की योजना एवं बालक को सुसंस्कृत बनाने की साधना। आशीर्वचन यही थे ''सुसंस्कृत भव''।

वधू चाहिए

क्षत्रिय पंजाबी परिवार का लड़का जन्मतिथि 19-02-1987, कद 5 फुट 8 इंच, बीटैक डीलाईट कम्पनी में सीनियर ऑडीटर बेंगलूरू में कार्यरत अच्छा वेतन हेतू समकक्ष योग्यता की कार्यरत वधू की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र-रमेश भण्ड़ारी 98148-62574

क्रान्तिकारी-महर्षि दयानन्द

ले.-अर्जुन देव स्नातक, 5 सीताराम भवन फाटक, आगरा केण्ट

आधुनिक काल में जब देश विदेशियों से आक्रान्त रहा-तब इस देशवासियों में अपने प्राचीन गौरव का भाव लुप्त प्राय हो गया था। महाभारत के बाद इस देश में अनेक मिथ्या वादों का जन्म हुआ। वेद-ज्ञान के लुप्त होने से तथाकथित पुराणों, तन्त्रग्रन्थों तथा अन्य अनेक स्मृति ग्रन्थों का निर्माण स्वार्थ भाव से प्रेरित होकर किया गया। अन्धविश्वासों, पाखण्डों आदि के कारण धर्म का वास्तविक स्वरूप लुप्त हो गया था। तीर्थ-भ्रमण, गंगादि नदियों में स्नान, एकादशी व्रत, नाम-स्मरण आदि अज्ञान युक्त कार्यों से मोक्ष प्राप्ति या ईश्वर दर्शन आदि के भाव जागृत हुए। पौराणिक कथाओं के प्रचार प्रसार से विविध प्रकार के देवों की मूर्तियों, उनके पूजा-पाठ के विभिन्न रीतियों के कारण पारस्परिक फूट वैमनस्य बढ़ गया था। जन सामान्य में धारणा फैली हुई थी विपत्ति के समय शिव के गण, विष्णु के अनुचर या गणेश-हनुमान आदि आकर हमारी रक्षा करेंगे आदि मिथ्या भाव हृदय पटल पर अंकित हो गये थे।

भारतीय समाज में उक्त जाल ग्रन्थों के आधार पर ही शूद्रों पर अमानवीय अत्याचार होते थे। बाल-विवाह, बहु-विवाह, सती-प्रथा तथा विधवाओं पर अमानवीय अत्याचार हो रहे थे। नारी एवं शूद्र को शिक्षा के अधिकार से पूर्णत: वंचित कर दिया गया था। यह सब तथाकथित स्वरचित ग्रन्थ, जो संस्कृत में लिखे थे, अज्ञानियों को शास्त्र वचन कहकर समझाया जाता था "इनका पालन न करोगे तो नर्कवास प्राप्त होगा" यह भय भी उन्हें दिया जाता था।

इस दशा में जो भी विदेशी आया इसे कुचलता रहा, गुलाम बनाता रहा, अत्याचार करता रहा। अस्पृश्यता से पीड़ित शूद्र वर्ग में मौलवियों तथा पादरियों ने अपना मत परिवर्तन का जाल बिछा दिया। थोड़ी संख्या में आये मुसलमान-ईसाई धीरे-धीरे अपनी संख्या बढ़ाने लगे। तथाकथित पण्डितों, क्षत्रियों, वैश्यों आदि या साधु सन्तों आदि को इस से कोई मतलब नहीं था। भारतीय संस्कृति का अस्तित्व समाप्त प्राय हो रहा था।

अंग्रेजों के आधिपत्य में इन देशवासियों पर अनेक अमानवीय अत्याचार हुए तो भी इन मृत प्राय: देशवासियों में संजीवता नहीं आई। कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों ने सर्व प्रथम यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि आर्य यहाँ के निवासी नहीं थे, यहाँ तो अन्य कोल-भील आदि जंगली अनपढ़ जातियाँ रहती थी। वेद कोई धर्म ग्रन्थ नहीं यह तो गंडरियों के गीत है आदि अन्य अनेक बातें भारतीय संस्कृति के विनाश करने वाले तथ्यों का प्रचार अंग्रेजी शासक कर रहे थे। यहाँ के तथाकथित पठित जन समूह अंग्रेजों के गौरव गान में, उनके द्वारा प्रचारित आर्यों के बाहर से आगमन का तथा वेदों के विषय अनर्गल बातों के समर्थन में अपने ज्ञान की इतिश्री समझ रहे थे।

इस प्रकार धार्मिक, सामाजिक एवं भारतीय संस्कृति के विनाश, घोर पतन की दशा को देखकर प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द की आत्मा चीत्कार कर रही थी। योग्य शिष्य स्वामी दयानन्द पाकर उन्होंने सन्तोष का अनुभव किया। शिक्षा समाप्ति पर गुरु दक्षिणा में यही मांगा कि "वेदों का उद्धार करो, संस्कृति के स्वाभिमान को जागृत करो, नारी एवं शूद्र को समाज में सम्माननीय स्थान दिलाओ, अज्ञान-पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि को निर्मूलकर सत्य ज्ञान का आलोक फैलाओ" तथास्तु कहकर स्वामी दयानन्द ने भारत में ही नहीं विश्व में महान् क्रान्तिकारी कार्य किये।

सर्व प्रथम उन्होंने इस देश के नाम आर्यवर्त घोषित कर के आर्यों का मूल निवास स्थान भारत को ही सप्रमाण घोषित किया। वेदों के विषय में प्रचलित भ्रान्तियों का निराकरण कर उसे ईश्वरीय ज्ञान घोषित किया। ईश्वरीय ज्ञान सार्वभौम, सर्वजनहिताय एवं सृष्टि में प्राप्त विज्ञान सम्मत नियमपालक तथा भेदभाव से रहित सर्वोपकारी के रूप में उद्घोषित किया। वेदों में किसी प्रकार आधुनिक संसार में घटित मानवीय इतिहास नहीं, पशु हिंसा नहीं, अश्लीलता नहीं और न ही जाति विशेष या देश विशेष का विवरण प्राप्त होता है। अन्धविश्वास, जादू-टोने, फलित ज्योतिष के आधार पर ग्रहों, भूतों आदि की मान्यता को सप्रमाण निर्मूल किया। वेद भाष्यों में सायण, उवट, महीधर आदि की भूलों को दिखलाकर निघण्टु, निरुक्त तथा शतपथ ब्राह्मण आदि के आधार पर वेद भाष्य करने का अभिनव वर्तमान की दृष्टि में किन्तु प्राचीन ऋषि-मुनि सम्मत मार्ग प्रशस्त किया। इस कार्य को करने के लिए बड़े बड़े दिग्गज पण्डितों से शास्त्रार्थ कर उनकी शंकाओं का समाधान किया। उनके इस कार्य की प्रशंसा विश्व के समस्त विद्वानों ने की।

द्वितीय क्रान्तिकारी कार्य स्वराज्य के सर्वप्रथम उद्घोषक के रूप में प्राप्त होता है। काँग्रेस के भीष्म पितामह समझे जाने वाले दादाभाई नौरोजी ने 1906 में 'स्वराज्य' शब्द का उच्चारण किया था। 1916 के लखनऊ काँग्रेस अधिवेशन में 'स्वराज्य के जन्म सिद्ध अधिकार' का दावा लोकमान्य तिलक ने किया। 1928 में काँग्रेस ने लाहौर में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा करके उसको अपने लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया। किन्तु स्वामी दयानन्द ने सन् 1875 में जब कि 'स्वराज्य' का नाम लेना मात्र अपराध बोध समझा जाता था, लोक इस शब्द के उच्चारण मात्र से डरते थे, तब जब कि 'स्वराज्य' शब्द का चिन्तन भी किसी के मस्तिष्क में नहीं उपजा था उस स्वराज्य और चक्रवर्ती सम्राज्य की घोषणा की थी। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में उन्होंने स्पष्ट निर्भीकतापूर्वक घोषणा की थी-"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" निश्चय से महर्षि ने विक्टोरिया महारानी की घोषणा के बाद इस प्रकार साक्षात् उसका विरोध करना महर्षि की निर्भीकता का सर्वोत्तम प्रमाण है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में स्पष्ट लिखा "यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं।"

तृतीय क्रान्तिकारी कार्य भारतीय संस्कृति के गौरव को उच्चासन पर स्थित करने के लिए प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्स्थापित करना है। गुरुकलों में शिक्षा प्राप्त कर विद्वान स्नातक वैदिक धर्म एवं भारत निवासियों पर होने वाले विविध बौद्धिक, साम्प्रदायिक आक्रमणों का उत्तर देने में सक्षम हुए। आज सही वेदों की दिशा पर चलने वाले, वैदिक विधि से संस्कारादि सम्पन्न कराने वाले, हिन्दी भाषा को वेद तथा वैदिक विविध साहित्य साधना से अलंकृत करने वाले गुरुकुलों के शिक्षित स्नातकवर्ग हैं। देश के स्वतन्त्रता संघर्ष में जीवनाहुति देने वाले अधिकांश जन समुदाय महर्षि दयानन्द स्थापित आर्य समाज की देन हैं। आर्य समाज ने अपने ही भाईयों भारतवासियों द्वारा प्राप्त विविध प्रकार के अत्याचारों, विरोधों को सहन करते हुए भी स्व संस्कृति की रक्षा करने, भारतीयों के गौरव को उच्चासन पर स्थिर करने के कार्य को नहीं छोड़ा।

चतुर्थ क्रान्तिकारी कार्य नारी एवं शूद्रों को समाज में स्वाभिमान पूर्वक जीवन का स्थान दिलाना। अधिकांश स्वामी जी से पूर्व सन्तों ने नारी को नरक का द्वार तथा 'विष वल्लरी' का स्थान वर्णित किया। नारी पर विविध रूपों में अत्याचार ही होते रहे। अनाथ-विधवा तथा विवाहित भी हो तो उसे शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार ही नहीं था। शूद्र को समाज में समानता का स्थान नहीं था। "स्त्री शूद्रो नाधीयताम" स्त्री-शूद्र अध्ययन के अधिकारी नहीं हैं इस तथाकथित शास्त्र वचन को शास्त्रीय आधार पर स्वामी जी ने निषिद्ध कर के शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर उनको शिक्षा प्राप्त करने तथा समाज में अपने गुणकर्मों के आधार पर उच्चासन पर स्थापित करने का क्रान्तिकारी कार्य स्वामी दयानन्द जी का ही है।

पण्डित्य के आगे नतमस्तक हो ब्राह्मणों का साथ देने वाले, क्षत्रियों के क्षात्र बल के आगे झुककर उनकी प्रशंसा के गीत गाने वाले, कमनीय काञ्चन से आकर्षित होने वाले अनेक सन्त भारतीय समाज में हुए हैं किन्तु तथाकथित समाज द्वारा सर्वथा उपेक्षित असहाय दीन हीन नारी-शूद्रों पर होने वाले अत्याचारों से द्रवित होकर उच्चकुल ब्राह्मण वंश में जन्म लेकर उनको गले लगाने वाला, उनके दुखों को देखकर द्रवित होने वाला पहला सन्त दयानन्द है। गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना कर महर्षि ने भारतीय प्राचीन व्यवस्था को बल प्रदान करने का महान कार्य किया।

इसके अतिरिक्त महर्षि ने अज्ञान जनित अनेक दार्शनिक मिथ्या प्रचलित सिद्धान्तों को तर्कानुसार वैदिक प्रमाणों के साथ निरस्त किया। कर्म-सिद्धान्त, त्रैतवाद, संस्कार प्रणाली, पंचयज्ञ, वेदों में विविध विज्ञान आदि बातों को स्थापित कर महान् क्रान्तिकारी कार्य किया है। महर्षि ने ही देश की आर्थिक व्यवस्था के 'किसानों' को राजाओं का 'राजा' कहा है। आर्थिक व्यवस्था का मूल आधार 'गाय' को वर्णित किया। उनके अनुसार-"गौ भारत का अभिमान है, राष्ट्र का प्रतीक है, स्वराज्य का आधार है, सुखों का स्रोत है, सम्पत्ति का केन्द्र है, निर्धन का जीवन है, धनवान की शोभा है, सरलता और सौम्यता की संजीव मूर्ति है, परोपकार की प्रतिमा है और निस्वार्थ सेवा का पार्थिव रूप है।"

लेख के कलेवर के अनुसार महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी कार्यों के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिए।

कारगिल विजय दिवस मनाया

स्त्री आर्य समाज फिरोजपुर छावनी ने कारगिल विजय दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कारगिल में देश पर न्यौछावर होने वाले वीर जवानों को याद किया गया और श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आर्य समाज के प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने स्त्री आर्य समाज के सम्मेलन में कहा कि हिन्दु की नहीं है, किसी मुस्लिम की नहीं है, है हिन्द जिसका नाम, शहीदों की जमीं है, हम एक थे, एक हैं गा कर सभी वीर शहीदों को श्रद्धाजंलि दी और आर्य समाज के सत्संग में उपस्थित आर्यजनों को देशभक्ति से ओत-प्रोत कर दिया। इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज की सभी बहनों ने बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

आर्या कमलेश भारद्वाज मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

पृष्ठ 2 का शेष-वेदों में सामाजिक जीवन

(चकमानाय) चाहने वाले (रफिताय) दरिद्रता से पीड़ित (उपजग्मुषे) गृह पर याचनार्थ आये हुए के लिये न देने में (मनः) मन को (स्थिरम्) दृढ़ (कृणुते) कर लेता है (पुरा) सामने (चित्) ही उत्तम वस्तुओं का (सेवते) सेवन करता है। (सः) वह अपने को (मर्डितारं) सुख देने वाले को (न) नहीं (विन्दते) प्राप्त होता है।

एक पाद् भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात्त्रिपादमभ्येति पश्चात्।

चतुष्पादेति द्विपदामभि स्वरे सम्पश्यन्पङ्क्ति रुपतिष्ठ मानः।। ऋ. 10.117.8.

(एक पाद्) एक भाग का धनी (भूयः) पुनः (द्विपादः) दुगुना (विचक्रमे) करता है (द्वि पात्) द्विगुण वाला (पश्चात्) बाद में (त्रिपदम्) तीन गुना (अभि एति) होता है (चतुष्पात्) चार गुना धनी मनुष्य (द्विपादम्) दो गुणा धन वाले के (पंक्तीः) क्रम को (अभिस्वरे) अभिगमन में (संपश्यन्) देखता हुआ (उपतिष्ठ मानः) जाता हुआ (एति) होता है।

न त्वदन्य कवितरो न मेधया धीरतरो वरूण स्वधावन्।

त्वं त्वा विश्वा भुवनानि वेत्य स चिन्नु त्वज्जनो मायी विभाय।।

अथर्व. 5.11.4.

(स्वधावन्) हे आत्म धारण वाले स्वाधीन (वरूण) श्रेष्ठ पुरूष। (मेधया) अपनी बुद्धि के कारण (त्वत्) तुझ से (अन्यः) अन्य मूर्ख (न) न तो (कवितरः) अधिक सूक्ष्मदर्शी और (न) न (धीरतरः) अधिक बुद्धिमान् है। (त्वम्) तुझसे (चित्त नु) अवश्य ही (बिभाय) भयभीत हुआ है।

शिक्षेय यस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे।

यदहं गोपतिःस्याम्।।

ऋ.8.14.2

(शचीपते) हे इन्द्र! मेरी इच्छा सदा ऐसी रहती है कि (अस्मै) सुप्रसिद्ध (मनीषिणे) मनीषी पुरूषों को (शिक्षेयम्) बहुत धन दूँ। (दित्सेयम्) सदा ही मैं देता रहूँ। (यद्) यदि (अहम्) मैं गोपतिः स्याम्) ज्ञानों तथा गो प्रभृति पशुओं का स्वामी होऊँ। मेरी इच्छा को पूर्ण करो।

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः।

संज्ञानमश्विना युवामिहास्मायु नि यच्छतम्।। अथर्व. 7.52.1.

(स्वेभिः) अपनों के साथ (नः) हमारा (संज्ञानम्) एक मत और (अरणेभिः) बाहर वालों के साथ (संज्ञानम्) एक मत हो। (अश्विना) हे माता पिता। (युवम्) आप दोनों (इह) यहां पर (अस्मासु) हम लोगों में (संज्ञानम्) एक मत (नि) निरन्तर (यच्छतम्) दान करो।

सं जानामहै मनसा सं चिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन।

मा घोषा उत् स्थुर्बहुले विनिर्हते मेषुः पप्तदिन्द्रस्याहन्यागते।।

ऋ. 7.52.2.

(मनसा) आत्म बल के साथ (सम् जानामहै) हम मिले रहें (चिकित्वा) ज्ञान के साथ (सम्) मिले रहें (दैव्येन) विद्वानों के हितकारी (मनसा) विज्ञान से (मा युष्महि) हम अलग न होवें। (बहुले) बहुत (विनिर्हते) विविध वध के कारण युद्ध होने पर (घोषाः) कोलाहल (मा उत् स्युः) न उठे (इन्द्रस्य) बड़े ऐश्वर्यवान् राजा का (इषुः) बाण (अहनि) दिन (आगर्ते) आने पर (हम पर) (मा पप्तत्) न गिरे।

प्र वो देवायाग्नये बर्हिष्ठमर्चास्मै।

गमद्देवे भिरा स नो यजिष्ठो बर्हिरा सदत्।। ऋ. 3.13.1

हे मनुष्यो। जो पुरूष (देवेभिः) उत्तम गुणों के साथ (अस्मै) इस (देवाय) श्रेष्ठ गुण युक्त (अग्नेय) अग्नि समान तेजस्वी के लिये (वः) आप लोगों को (आ) सब प्रकार (गमत्) प्राप्त होवे उस (बहिष्ठम्) यज्ञ में बैठने वाले का (प्र अर्च) विशेष सत्कार करो। (सः) वह (यजिष्ठः) अतिशय यज्ञ करने वाला (नः) हम लोगों को (बर्हि) अन्तरिक्ष में (आ सदत्) प्राप्त होवे।

भावार्थ-हे मनुष्यो। जो लोग आप लोगों का सत्कार करते हैं उनका आप लोग भी सत्कार करें। जैसे विद्वत् जन विद्वान् पुरूषों से विद्या युक्त शुभ गुणों को ग्रहण करते हैं उन विद्वज्जनों की आप लोग भी सेवा करें और हम लोगों को उत्तम गुण प्राप्त हों ऐसी इच्छा करो।

आ नो अद्य समनसो गन्ता विश्वे सजोषसः।

ऋचा गिरा मरूतो देह्यादिते सदने पस्त्ये महि।। ऋ.8.27.5.

हे (विश्वे) सब विद्वानों। (समनसः) आप सब एक मन होकर और (सजोषसः) समान कार्य के लिये सब कोई मिलकर (अद्य नः) आज हमारे साथ (आगन्त) आवे और कार्य में सहयोग दे तथा (मरूतः) हे बन्धु बान्धवों तथा (महि देवि अदिते) माननीय देवी माताओं (गिरा) सुन्दर वचन (ऋचा) और स्तुति सहित होकर हमारे (सदने पस्त्ये) स्थानों और गृहों में बैठें।

भावार्थ-जो छोटे, बड़े, मूर्ख, विद्वान्, राजा और प्रजा यज्ञ में श्रद्धा से आवे वे सब ही सत्कार योग्य है।

उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम्।

मघवन्भूरितेवसु।। ऋ.8.32.8.

हे (मघवन्) उदाराशय सम्पत्तिशाली राजन्। (तेवसु) आपका सुख में बैसाने वाला ऐश्वर्य (भूरि) विद्या, आरोग्य, सुवर्ण आदि अनेक प्रकार का है। (नः) हमें (उत) भी (अविक्षितम्) अक्षय (पितुम्) भोजन (संरराणः) सम्यक् रीति के प्रदान करते हुए (आ भर) हमारा पालन-पोषण कीजिये।

भावार्थ-विद्या, आरोग्य, सुवर्ण आदि विभिन्न प्रकार के वसाने वाले धन के स्वामियों को उनसे दूसरों का भरण-पोषण करना चाहिये।

इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे।

सरो गौरो यथा पिब।।

ऋ.8.45.24.

हे इन्द्र। आपकी कृपा से (इह) इस संसार में (त्वा) आपके उपदेश से (महे राधसे) बहुत धनों की प्राप्ति के उत्सव के लिये (गोपरीणसा) गौवों के दूध, दही आदि पदार्थों से (मदन्तु) गृहस्थ जन परस्पर आनन्दित होवे और करे (यथा) जैसे (गौरः) तृषित मृग (सरः) सरस्थ जल पीता है तद्वत् आप बड़ी उत्कण्ठा के साथ यहां आकर (पिब) हमारे समस्त पदार्थों का अवलोकन करें।

अव स्वरा नि गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत्।

पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम्।। ऋ.8.69.9.

(गर्गरः) गर्गर शब्द युक्त नक्कारा (अव स्वराति) भयावह शब्द कर रहा है (गोधा) ढोल, मृदङ्ग आदि (परि सनिष्वनत्) चारों तरफ बड़े जोर से बज रहे है। इसी प्रकार (पिङ्गा) अन्यान्य वाद्य ही (परि चानिष्कदत्) चारों ओर भय दिखला रहे हैं। अतः हे मनुष्यो। (इन्द्राय) उस परमात्मा के लिये (ब्रह्म उद्यतम्) स्तुति गान का उद्योग हो।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः।

उत द्विषो मर्त्यस्या।।

ऋ.8.71.1.

(अग्ने) हे अग्नि स्वरूप परमात्मा। (त्वम्) तू (महोभिः) स्वकीया महती शक्तियों के द्वारा (विश्वस्याः) समस्त (अरातेः) शत्रुता, दीनता और मानसिक मलिनता आदि से (नः) हमको (पाहि) बचा (उत) और (मर्त्यस्य) मनुष्य के ईर्ष्या, द्वेष और द्रोह आदि से भी हमको बचा।

हरियाला सावन मनाया गया

आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल, बठिंडा के प्रांगण में दिनांक 2 अगस्त 2019 दिन शुक्रवार को हरियाला सावन बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस इवसर पर छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सर्वप्रथम बच्चों ने पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए पौधारोपण किया। छात्राओं और अध्यापिकाओं ने भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधे लगाए। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल अपनी पत्नी श्रीमती नीलम जी सहित पहुँचे। मंच का संचालन श्रीमती चन्द्रकान्ता जी ने सुचारू रूप से किया जिसमें बच्चों ने फुलकारी, आई बागों में बहार, देशभक्ति के गीत बहुत ही सुन्दर शहीदों पर कविताएं, भाई बहन के प्रतीक रक्षाबन्धन पर गीत तथा तीज के त्यौहार पर गीत गाए। छोटे-छोटे बच्चों ने जल बचाओ पर बहुत ही अच्छा स्किट प्रस्तुत किया। मैडम मधुवाला जी ने नशे की रोकथाम पर अपने विचार प्रकट किए। मैडम अर्चना जी ने बच्चों को स्वच्छता के बारे में बताते हुए कहा कि हमें स्वस्थ रहने के लिए अपने चारों तरफ सफाई रखनी चाहिए। मैडम नीलम ने सावन के महत्व पर अपने विचार प्रकट किए। मैडम रीटा बांसल जी ने बच्चों से सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे। स्कूल के प्रिंसिपल श्रीमती सुषमा मैहता जी ने बच्चो को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमें अपने देश को खुशहाल बनाने के लिए हम अपने देश में नशा मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, नैतिक मूल्यों की स्थापना करें ताकि हमारा भारत महान बन सके। स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल, उपप्रधान श्री सुरिन्द्रि गर्ग, मैनेजर श्री निहाल चन्द जी ने शहीद वीरों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए और बच्चों को शुभकामनाएं दी। मैडम कान्ता कटारिया जी ने आए हुए मेहमानों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले सभी छात्राओं को ईनाम देकर सम्मानित किया गया। अन्त में शान्तिपाठ करवाया गया।

प्रिंसिपल आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल बठिंडा

आर.के.आर्य कालेज नवांशहर की छात्रा चाहत का गुरु नानक देव विश्वविद्यालय में नॉन मैडीकल में सैमेस्टर चार में अव्वल आने पर पुष्प देकर सम्मानित करते हुये प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर की छात्रा प्रभदीप का गुरु नानक देव विश्वविद्यालय में बी.ए.सैमेस्टर चार में प्रथम आने पर मुंह मीठा करवाते हुये प्रबन्ध समिति के सचिव श्री विनोद भारद्वाज जी, प्रिंसीपल तरणप्रीत कौर एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

आर.के.आर्य कालेज नवांशहर की छात्रा चाहत यूनिवर्सिटी में रही अव्वल

गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर द्वारा घोषित किये परिणामों में आर.के.आर्य कालेज नवांशहर की छात्रा चाहत परीक्षा में अव्वल रही। कालेज प्रिंसीपल डा. संजीव डाबर ने बताया कि बी.एस.सी. नॉन मैडीकल सैमेस्टर चौथे की छात्रा चाहत ने 400 में 360 अंक लगभग 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करके यूनिवर्सिटी तथा कालेज में पहला स्थान हासिल किया जबकि उसने पिछले वर्ष सैमेस्टर तीसरे में 400 में 355 लगभग 88.75 प्रतिशत अंक प्राप्त कर यूनिवर्सिटी में दूसरा स्थान हासिल किया था। इस मौके पर कालेज प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने छात्रा चाहत की पूरी फीस माफ करने का ऐलान किया। उन्होंने कहा कि चाहत ने सारे जिले का नाम रोशन कर दिया है। उसे संस्कार देने वाले माता-पिता व कालेज स्टाफ व उसकी खुद की मेहनत रंग लाई है। बाकी विद्यार्थियों को भी इससे कठिन मेहनत करने की प्रेरणा लेनी चाहिये। इस मौके पर कालेज कमेटी के सचिव एस.के. बरूटा, डीन कालेज अकादमिक अफेयर्स प्रोफैसर विनय सोफ्ट, प्रो. मनीश मानिक, प्रो.बी.पी. सिंह, प्रो. अम्बिका गॉड, प्रो. रोबिन कुमार, डा. विशाल पाठक ने होनहार छात्रा चाहत तथा उसके माता-पिता को इस सफलता के लिये बधाई दी।

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज की छात्रा प्रभदीप ने 694 अंक लेकर किया यूनिवर्सिटी में टॉप

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय ने बी.ए. सैमेस्टर चार का परिणाम घोषित किया है जिसमें नवांशहर के बी.एल.एम. गर्ल्ज कालेज नवांशहर की छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन किया है। बी.एल.एम. कालेज नवांशहर की छात्रा प्रभदीप ने यूनिवर्सिटी में पहला स्थान प्राप्त कर कालेज का नाम रोशन किया है।

कालेज प्रिंसीपल तरणप्रीत कौर वालिया ने बताया कि पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी कालेज की छात्राओं ने अच्छा प्रदर्शन किया है। कालेज की छात्रा प्रभदीप कौर ने 694 अंक प्राप्त कर विश्वविद्यालय में पहला स्थान प्राप्त किया है। इस मौके पर कालेज मैनेजमेंट के प्रधान देशबन्धु भल्ला, सचिव श्री विनोद भारद्वाज और स्टाफ सदस्यों ने छात्रों को बधाई दी और छात्रा के अच्छे भविष्य के लिये आशीर्वाद दिया और बच्चों से और ज्यादा परिश्रम करने के लिये आह्वान किया। इस दौरान प्रभदीप कौर ने बताया कि वह एक कामयाब गायिका बनना चाहती है। इसमें कालेज का स्टाफ एक अच्छी भूमिका निभा रहा है।

वेद का ज्ञान सम्पूर्ण मानवता के लिये कल्याणकारी है

आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला में श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में दो दिवसीय वेद प्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंच से भजन प्रस्तुत करते हुये जसविन्द्र आर्य। उनके साथ मंच पर विराजमान श्री विजयेन्द्र शास्त्री जी एवं अन्य जबकि चित्र दो में उपस्थित आर्य भाई एवं बहिनें।

आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला द्वारा श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में दो दिवसीय वेद प्रचार एवं भजन का कार्यक्रम पटियाला शहर के विभिन्न स्थानों पर करवाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र से वेद प्रचार विभाग की एक प्रचार मंडली ने मनी राम आर्य के मार्ग दर्शन में वेद की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार किया। आर्य समाज के प्रधान श्री राज कुमार सिंगला की अध्यक्षता में एक विशेष सत्संग का आयोजन आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला में किया गया। इस अवसर पर आचार्य विजयेन्द्र शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि वेद परमात्मा द्वारा दिया गया पवित्र ज्ञान श्रेष्ठ मानव बनने का संदेश देता है। वेद का ज्ञान पूरे मानव समाज के लिये कल्याणकारी है। यह सार्वभौमिक और सार्वकालिक उपयोगी ज्ञान है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों की ओर लौटने का संदेश दिया और इसके साथ साथ सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद भी किया। श्रावणी पर्व भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। श्रावणी पर्व भारतीय संस्कृति की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि श्रावणी पर्व के बिना अपनी संस्कृति की कल्पना करना भी असंभव है। भारतीय जनजीवन में तथा वैदिक संस्कृति में पर्वों का विशेष महत्व है। श्रावणी का पर्व ज्ञानार्जन का पर्व है। स्वाध्याय के द्वारा ज्ञान प्राप्त करके उसके ऊपर चिन्तन और मनन करना इस पर्व का मुख्य उद्देश्य है। सतत् और शाश्वत अध्ययन ही जीवन की गरिमा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर श्रावणी के पावन पर्व से ही आर्य जगत् का वेद प्रचार सप्ताह आरम्भ होता है जो भाद्र कृष्ण की अष्टमी तिथि तक चलता है। भाद्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी भी भारतीय जीवन में अतिशय पुण्य की तिथि है क्योंकि इस दिन वैदिक संस्कृति के परम उद्धारक परम योगीराज और द्वापर युग के नि:स्पृह राजनीतिज्ञ श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। इन दो पुण्य तिथियों के मध्य हमारा वेद प्रचार सप्ताह मनाया जाता है जो स्वाध्याय और चिन्तन का (शेष पृष्ठ चार पर)

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org